

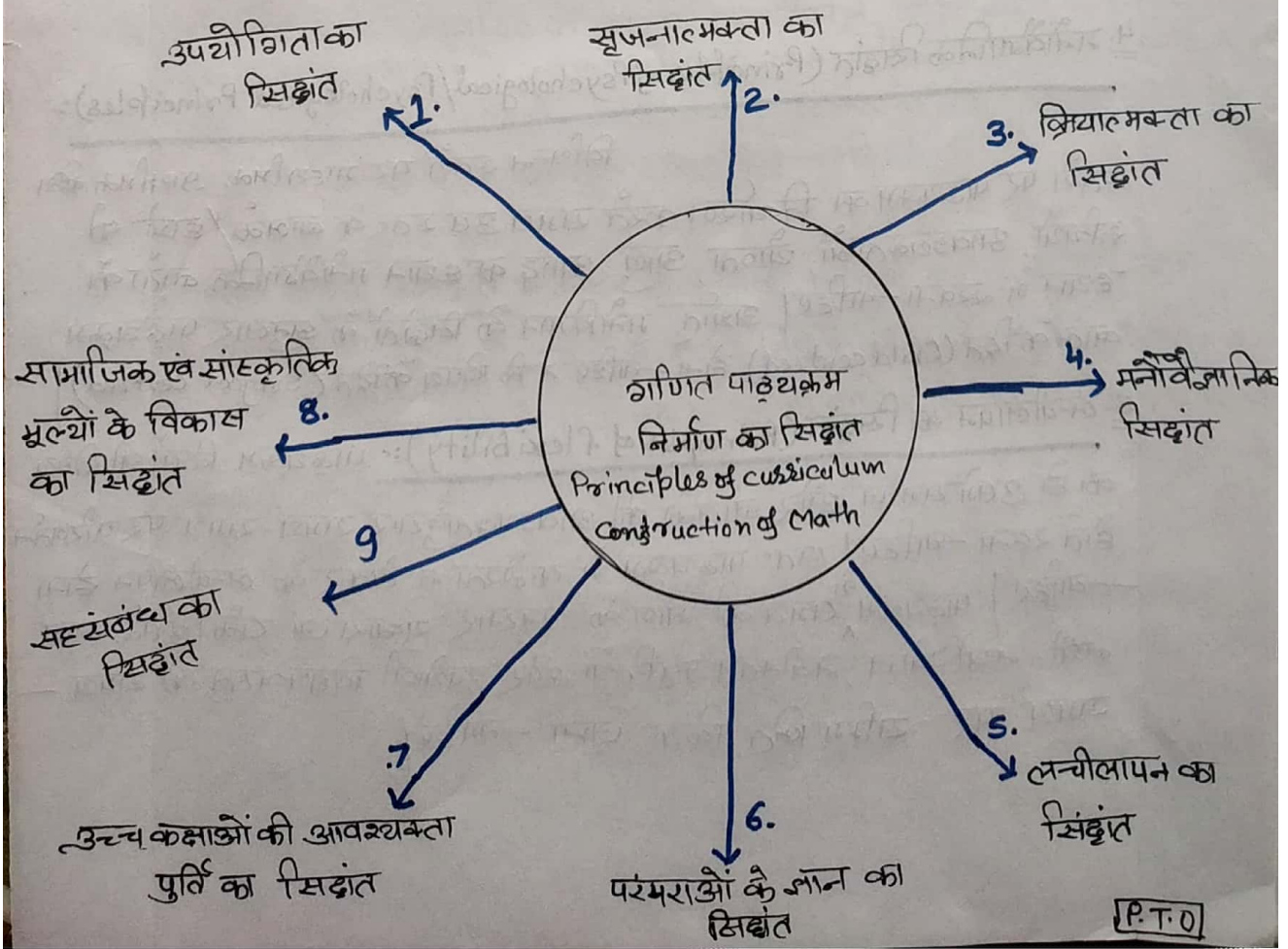
B.Ed paper C.5

प्रश्न:- विद्यालय स्तर पर गणित पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत को बताएं।
OR, प्रश्न:- किसी विषय का परिचय देते हुए, उसके महत्व, सिद्धांत के बारे में समझाएं।

Ans: Introduction:- किसी भी विषय का सभ शिक्षा जगत में महत्व एवं स्थान उसके माध्यम से शिक्षा के तात्कालिक एवं दीर्घ कालिक उद्देश्यों की प्राप्ति में होने वाली सहायता के आधार पर सुनिश्चित होता है। अगर विषय शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में अधिक सहायक होता है तो उसका महत्व भी उच्च होता है। वैसे तो शिक्षा के अनेकों उद्देश्य हैं, परंतु सबसे आवश्यक व महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि मनुष्य को जीविकोपार्जन के योग्य बनाया जाए।

शिक्षा के इस अतिआवश्यक उद्देश्य की प्राप्ति में गणित महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है। इसीलिए प्रायः सभी महान् शिक्षाशास्त्रीयों जैसे:- हर्बर्ट, फ्रॉबेल, सर टी. पी. नन, पेस्टालॉजी आदि ने गणित को मानव समुदाय एवं पूरे संसार के विकास का प्रतीक माना है। इन सभी शिक्षाशास्त्रीयों ने गणित की शिक्षा को मनुष्य के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक विकास का सर्वश्रेष्ठ साधन मानकर विद्यालय शिक्षा के पाठ्यक्रम में उच्च स्थान दिया है।

* नेपोलियन ने कहा: "गणित की ऊन्नती के साथ देश की ऊन्नती का घनिष्ठ संबंध है।"



[P.T.O]

1. उपयोगिता का सिद्धांत (Principles of Utility):- गणित का पाठ्यक्रम ऐसा

होना चाहिए कि बच्चों उनके साथ व्यवसायिक जीवन के इतरदायित्वों को सही प्रकार से संभालने योग्य बनाए। गणित कि उपयोगिता से तात्पर्य ऐसा ज्ञान

- (i) जो गणित के इतिहास तथा गणितज्ञों के बारे में परिचय दे सके।
- (ii) जो व्यवहारिक और दैनिक जीवन में उपयोगी हो।
- (iii) जो विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में सहायता कर सके।
- (iv) जो गणित के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित कर सके।

2. सृजनात्मकता का सिद्धांत (Principles of Creativity):-

गणित के सही शिक्षण के

लिए छात्रों को सृजनात्मकता, रचनात्मक खोजकर्ता बनाना होता है। अर्थात् गणित ऐसे प्रश्न होते हैं जो बालक सृजन करने का अवसर देते हैं, जो सही उत्तर के लिए खोज करते हैं।

3. क्रियात्मकता का सिद्धांत (Principles of Activity):-

गणित का पाठ्यक्रम

क्रिया केंद्रित होना चाहिए। केवल पुस्तक किये ज्ञान मात्र न होना चाहिए। गणित में उम्र प्रकरणों को पढ़ाया जाना चाहिए जिसमें छात्र द्वारा की गयी क्रियाएँ अधिक होती हैं। रहने के बजाय गणित में करके रखने की आदत होनी चाहिए।

4. मनोवैज्ञानिक सिद्धांत (Principles of Psychological/ Psychological Principles):-

विभिन्न स्तरों पर माध्यमिक, प्राथमिक

स्तरों पर पाठ्यक्रम का निर्धारण करते समय उच्च स्तर के बालकों/ छात्रों की रुचियाँ, आवश्यकताओं, योग्यता, आयु आदि का ध्यान मनोवैज्ञानिक बातों को ध्यान में रखना चाहिए। अर्थात् मनोविज्ञान के सिद्धांतों के अनुसार पाठ्यक्रम बालक केंद्रित (Child centred) होना चाहिए न कि विषय केंद्रित (Subject centred)।

5. लचीलापन का सिद्धांत (Principles of flexibility):-

पाठ्यक्रम किसी भी विषय

का हो उसमें समाज और बालकों की आवश्यकतानुसार समय-समय पर परिवर्तन होते रहना चाहिए। अतः पाठ्यक्रम में कठोरता न होकर के लचीलापन होना चाहिए। पाठ्यक्रम के समय की मांग के अनुसार सुधारा जा सके। उसके साथ नयी-नयी खोज, नवीनतम प्रवृत्तियों और उपयोगी विषयवस्तु के समय-समय पर सम्मिलित किया जाना चाहिए।

6. परंपराओं के ज्ञान का सिद्धांत (Principles of conservative Knowledge):-

हम अच्छी तरह से जानते हैं की किसी भी देश या समाज का वर्तमान अतीत पर निर्भर करता है और भविष्य के लिए जीवित रहता है। इसलिए समाज के अतीत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों का निर्माण करते समय उन प्रयत्नों का चुनाव किया जाना चाहिए जो अतीत से संबंधित हैं, वर्तमान में लाभदायक और भविष्य में उपयोगी हों। जो बच्चों को विभिन्न परंपराओं से अवगत कराये।

7. उच्च कक्षाओं की आवश्यकता पुर्ति का सिद्धांत:-

बालक को सबसे पहले प्राथमिक कक्षा में ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है, उसके बाद उच्च प्राथमिक, उसके बाद हाई स्कूल तत्पश्चात् उच्च माध्यमिक तथा विश्वविद्यालय तक शिक्षा प्राप्त करने जाता है। इसलिए पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय उन सभी नियम, सिद्धांत आदि को उचित स्थान देना चाहिए जिनकी आवश्यकता उच्च ज्ञान की प्राप्ति में है।

8. सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास का सिद्धांत:-

गणित का विषय सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टी कोण से उपयोगी है। इसलिए बदलती हुई सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं का गणित के पाठ्यक्रम पर प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक नागरिक को व्यावहारिक जीवन में निपुण बनाने के लिए उसकी गणितीय आवश्यकताओं एवं ज्ञान की पुर्तिकरना अतिआवश्यक है। इसलिए गणि पाठ्यक्रम में संस्था पद्धति, गणना संबंधी कुशलताओं तथा अन्य उपयोगी विषय वस्तु को पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए।

9. सह-संबंध सिद्धांत:-

बैकन के अनुसार गणित सभी विषयों के साथ अतिमहत्वपूर्ण है। विभिन्न क्षेत्रों में एवं विषयों की समस्याओं के समाधान गणित की सहायता से किये जा सकते हैं। गणित का व्यावहारिक जीवन से संबंध स्थापित करके इसे और अधिक रुचिकर तथा सरल बनाया जा सकता है।

Conclusion:- अ उपरोक्त सिद्धांतों की विवेचनाओं के अवलोकन से कह सकते हैं की वर्तमान समय में शिक्षण में अनेकों परिवर्तन हुए हैं। उसी के अनुसार गणित के पाठ्यक्रम में भी समय के अनुसार बदलाव देते रहना चाहिए। जिससे गणित विषय के उद्देश्य को पूर्ण किया जा सके। ये सब सभी संभव है जब अध्यापकों, शिक्षकों को इसकी आवश्यकता व विचार के अनुसार गणित के पाठ्यक्रम का निर्माण उपरोक्त सिद्धांतों के अनुसार करना होगा।

Arshad Ahmad
Thanks for reading full notes.